उत्तर

HINDI -MANUSHYATA-MAITHILISHARAN GUPT

Class 10 - हिंदी ब

1. **(ग)** धरती
   व्याख्या: सृष्टि के आरंभ से धरती समस्त संसार के लोगो को सिर्फ देती रही है इसलिए उससे बढ़ कर उदार हृदया कोई नहीं है।

2. **(ख)** उनके दयालु भाव के कारण
   व्याख्या: महात्मा बुद्ध को उनके दयालु भाव के कारण आज भी लोग याद करते हैं I

3. मनुष्य को परोपकारी होना चाहिए। उसे अपने या अपनों के हित की चिंता करने से अधिक दूसरों के हित की चिंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में सोचना पशु के समान है क्योंकि पशु जब चरागाह में होता है, तो केवल अपने लिए चरता है दूसरों की चिंता नहीं करता है। किंतु मनुष्यों को दूसरे के बारे में भी सोचना चाहिए, यही मनुष्यता है और इसी के कारण मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है।
   उदारता, सहानुभूति तथा बंधुत्व 'मानवता' (मनुष्यता) के प्रमुख गुण हैं।

4. **मनुष्यता** कविता में प्रयुक्त काव्य-पंक्ति 'मनुष्य मात्र बंधु है' से कवि का यह कहना चाहता है कि सभी मानव एक ही परमपिता की संतानें हैं।सभी का पिता एक ही होने के कारण सभी मनुष्य प्राणी आपस में एक-दूसरे के भाई हैं, बंधु हैं। अर्थात कवि यह कहना चाहता है कि सभी मनुष्यों को अपना पराया यह भाव छोड़कर एक दूसरे के साथ भाई -भाई के समान रहना चाहिए ।

5. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार, यह सांसारिकता, भौतिकता अस्थायी है। नश्वर वस्तुओं के आकर्षण में मनुष्यता के गुणों की उपेक्षा उपयुक्त नहीं है। धन, क्षमता व उपलब्धियों पर गर्व करना अज्ञानता है। इनमें स्थायित्व का अभाव है और यह हमें मानवतावादी कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करती, बल्कि इनसे व्यक्ति में अहंकार की भावना ही बढ़ती है।ये सब वस्तुएँ सदैव मनुष्य के पास नहीं रहती हैं।
   कवि के अनुसार, जो व्यक्ति ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास नहीं करता, वही भाग्यहीन है, क्योंकि समस्त संसार उसी ईश्वर की रचना है। वहीं सब कुछ करने वाला है,और उसकी कृपा के बिना मनुष्य स्वयं कुछ भी करने में सक्षम नहीं है। जो ईश्वरीय कृपा को छोड़कर कुछ और पाने को अधीर एवं अशांत रहता है, वास्तव में वह भाग्यहीन है। कवि के अनुसार, इस संसार के भाग्यहीन व्यक्ति वे हैं, जो अधीर होकर लोक कल्याणकारी परमार्थ का मार्ग त्याग देते हैं। उनका जीवन केवल स्वार्थ पर ही आधारित होता है। ऐसे भाग्यहीन व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते और स्वयं को जीवन-पथ का एकाकी राही मानकर अपना जीवन दुःखमय बना लेते हैं।वस्तुतः मनुष्य का कर्तव्य ही है दूसरों की सेवा करना और औरों के सुख दुख में भागीदार होना।

6. 'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य को यह बताने का प्रयास किया है कि सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। इस सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि सबको जन्म देने वाला ईश्वर एक है। मनुष्य-मनुष्य में थोड़ा-बहुत जो भेद है ,वह उसके अपने कर्मों के कारण है।स्वार्थ से क्षणिक सुख की प्राप्ति होती है, किन्तु परमार्थ का फल आंतरिक और लंबे अरसे तक होता है। एक ही ईश्वर या आत्मा का अंश उनमें समाए होने के कारण सभी एक हैं। इतना जानने के बाद भी कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य की अर्थात् अपने भाई की मदद न करे और उसकी व्यथा दूर न करे तो वह सबसे बड़े अनर्थ हैं। इसका कारण यह है कि ऐसा न करके मनुष्य अपनी मनुष्यता को कलंकित करता है।

7. श्री सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित 'मनुष्यता' कविता में मानवता, एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा आदि के भाव को प्रतिपादित किया गया है। कवि अपनी कविता के द्वारा मनुष्य को स्वार्थ, भिन्नता, वर्गवाद, जातिवाद आदि संकीर्णताओं से मुक्त करना चाहता है। मनुष्य में उदारता के भाव भरना चाहता है। कवि चाहता है कि हर मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे। हर मनुष्य को दुखियों, वंचितों और जरूरतमंदों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार रहना चाहिए। वह कर्ण, दधीचि, रंतिदेव आदि के अतुल त्याग से प्रेरणा ले। एक-दूसरे का सहयोग करके देवत्व को प्राप्त करे। हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अतः सभी मनुष्य भाई -बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये। वह हँसता-खेलता जीवन जिए तथा आपसी मेल-भाव को बढ़ाने का प्रयास करे। उसे किसी भी सूरत में अलगाव और भिन्नता को हवा नहीं देनी चाहिए। ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है।। यही इस कविता का मूल भाव है।

8. I. (ii) शरीर का चर्म
   II. (i) गांधार देश का राजा
   III. (iv) दूसरों की रक्षा के लिए
   IV. (iii) भूख से व्याकुल

9. I. (ii) दुनिया उसे मरने के भी याद करे
   II. (i) जीवन का बेकार होना
   III. (iv) केवल अपने विषय में सोचना
   IV. (iii) जो दूसरे के लिए जीता हो

10. प्रसेवा में,
    प्रबन्धक
    पंजाब नेशनल बैंक
    विकासपुरी (नई दिल्ली)
    विषय-चैक बुक खो जाने के संबंध में
    महोदय,

SAIRAJ

निवेदन है कि प्रार्थी आपकी शाखा का नियमित उपभोक्ता है और मेरी बचत खाता संख्या 6918 आपकी शाखा में ही हैं। जिसमें (लगभग 55,000/-रु.) जमा हैं। मैंने कुछ दिन पहले आपके बैंक से एक चेकबुक 20 चेकों की ली थी, जिसमें से अभी तक केवल 2 चेक ही निर्गत हुए हैं। अभी 18 चेक उसमें मौजूद हैं। कल शाम को मेरा बैग विकासपुरी से कैलाशपुरी आते समय गाड़ी से कहीं गिर गया है जिसमें कुछ कागजातों के साथ चेकबुक भी थी, काफी प्रयास के बाद भी नहीं मिली। अतः आपसे निवेदन है कि आप उस चेकबुक के किसी भी चेक का भुगतान मेरे खाते से रोकने का कष्ट करें अन्यथा मैं भरी संकट में पड़ जाऊँगा | इस पत्र के साथ अन्य आवश्यक कागज जैसे पासबुक,आधारकार्ड आदि संग्लग्न हैं। यद्यपि इस विषय में मैंने अपने क्षेत्रीय थाने में भी सूचना दर्ज करा दी है।

अत: सूचनार्थ एवं निवेदन हेतु पत्र आपकी शाखा में प्रस्तुत है।

आशा है आप भुगतान नहीं करेंगे।

भवदीय

गोविन्द सिंह पंचायत अधिकारी

विकासपुरी नई दिल्ली

दिनांक 17 जनवरी, 2019

11. **(a)** एक दानी राजा
व्याख्या: एक दानी राजा

12. **(d)** अपने मांस का दान दिया
व्याख्या: अपने मांस का दान दिया

13. **(c)** कुंती पुत्र कर्ण ने
व्याख्या: कुंती पुत्र कर्ण ने

14. **(d)** जो परोपकारी भाव रखता है।
व्याख्या: जो परोपकारी भाव रखता है।

15. **(b)** अपने शरीर की हड्डियाँ
व्याख्या: अपने शरीर की हड्डियाँ

16. **(d)** देवता
व्याख्या: देवता

17. **(a)** मदद के लिए
व्याख्या: मदद के लिए

18. **(a)** सहयोग की भावना से
व्याख्या: सहयोग की भावना से

19. **(a)** एक-दूसरे का सहयोग लेना या देना
व्याख्या: एक-दूसरे का सहयोग लेना या देना

20. **(a)** (i), (ii), (iv)
व्याख्या: परोपकारी लोगों की प्रशंसा देवता भी करते हैं। कलंक रहित लोग ही देवताओं के समीप जा सकते हैं। सभी मनुष्यों को एक-दूसरे का सहारा लेना चाहिए।

SAIRAJ